सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

ubl fnYyh
vd & 115

Jh lkbl ‘kd % 30
flrEcj& 2012

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

Å

AA Jh lkbukFkk; ue%AA
AA Jh lnx:ukFk nknk; ue%AA

çj.kk

x: cèkHkfxfu;k l

गुरूमार्ग में गुरू का संदेश या ईश्वरीय संदेश का ज्ञान जिस माध्यम से होता है उसे प्रेरणा कहते हैं। जब आने वाले भक्त को इस गुरूकार्य की जानकारी हो जाती है और खुद का विकास प्राप्त करने के हेतु से वह इस मार्ग का मतलब आरती साधना, ऊँकार साधना, अनुष्ठान और मुलाकात साधना का लाभ लेने लगता है तब श्री गुरू कृपावंत होकर उसे पारमार्थिक अवस्थाओं का अनुभव देने लगते है। प्राथमिक अवस्था में भक्त या सेवक, जो भी नियमित रूप से साधना उपासना और आचरण करने का प्रयत्न करता है उसे अपनी खुद की पात्रता न होने के बावजूद श्री गुरू जो अनुभव देते है उसका अध्ययन (अभ्यास) करके खुद का विकास करना होता है। प्रेरणा इस विषय में तीन प्रमुख भाग है, पहला भाग यह कि जो विचार आया है वह अपनी बुद्धी का विचार है या गुरू की प्रेरणा है उसका बोध होना। दूसरा भाग मतलब जो प्रेरणा हुई है उसका असली मायने में अर्थ क्या है? मतलब श्री गुरू को हमारे माध्यम से कौन सा कार्य करना है? और तीसरा भाग मतलब वह अपेक्षित कार्य श्री गुरूकृपाशीर्वाद से अपने काया, वाचा, मन से यशस्वी करना।

इन अवस्थाओं का ज्ञान होना, उनका अनुभव लेना और खुद के माध्यम में उन्हें कार्यान्वित करना यह साधक, सिद्ध और साध्य अवस्थाओं में होता है। इस गुरूमार्ग में आने वाले हर एक भक्त को इन पारमार्थिक उच्च अवस्थाओं का लाभ आसानी से हो इसलिये वं. दादा जी ने चार प्रतिमाओं की सिद्धता कर रखी है।

1) श्री साई शक प्रतिमा — ज्ञान
2) श्री कारण प्रतिमा — भक्ति
3) श्री महाकारण प्रतिमा — सेवा
4) श्री नारायणी प्रतिमा — जीवन सार्थक होना

हम में से करीब करीब सभी भक्त इस गुरूमार्ग में अपने प्रापंचिक मुश्किलों की वजह से आये । हमारा दुःख निवारण करने के लिये श्री गुरू ने कामकाज करके निराकरण दिया। आने वाला भक्त सेवा करते करते जब

नियमित रूप से उपासना करने की कोशिश करने लगता है तब कार्ये केन्द्र से उसे पहली प्रतिमा श्री साई शक दी जाती है।

श्री साई शक प्रतिमा का एक कार्य यह है कि उसमें कर्म का पूरा लाभ होकर मन को शांति और समाधान प्राप्त होने लगता हैं। तब ज्ञान अवस्था भक्त के माध्यम में कार्यान्वित होने लगती है। वह भक्त मार्ग के ज्ञान का लाभ लेने की कोशिश करता है और इस अपेक्षा से वह मुलाकात साधना का लाभ लेकर खुद के जीवन का ज्ञान प्राप्त करने लगता है।

तब उसे दूसरी प्रतिमा दी जाती है, श्री कारण प्रतिमा। इस प्रतिमा का एक कार्य यह है कि उससे हमारे प्रतिकूल कर्म का विमोचन होकर श्री गुरू ने प्रदान की हुई दीक्षाएँ हमारे जीवन में कार्यन्वित होने लगती है और 'भक्ति' यह अवस्था प्राप्त हो जाती हैं। तब उपासना करते समय (आरती, मुलाकात, ऊँकार साधना) में कभी रोना आता है, कभी रोमांच आता है। इस प्रकार के अनुभव पाकर इस उपासना की चाहत बढ़ने लगती है। आज कोई दस साल से या कोई पचास, साठ सालों से वही आरतीयाँ सुन रहे है लेकिन हर एक दिन वही आरती का एक अलग मजा आता हैं। यह भक्ती है। तब ऐसे लगता है कि अपने जीवन का कुछ तो सदुपयोग हो। हमारे माध्यम से अंशमात्र सेवा इसी जन्म में श्री गुरू करवाए। यह विचार आना मतलब श्री महा कारण प्रतिमा का लाभ शुरू होना है। श्री महाकारण प्रतिमा मतलब सेवा।

वं. दादाजी ने आत्मनिवेदन में कहा है कि 'सेवा' यह इतना छोटा शब्द है लेकिन इसका मतलब समझते समझते पूरी जिन्दगी चली जाती है।

चौथी सिद्ध प्रतिमा है श्री नारायणी प्रतिमा। मतलब जीवन सार्थक होना। नर का नारायण होना।

प्राथमिक अवस्था में इन प्रतिमाओं का लाभ होकर जब भक्त नित्य उपासना इसी 'भाव' अवस्था में करने लगता है तब श्री गुरू उसे 'भवातीत' अवस्था का लाभ देते है। तब वह भक्त, या सेवक यह सोचने लगता है कि प्राप्त हुआ जीवन खुद के लिये सिर्फ 25 प्रतिशत है और दुसरों के लिये 75 प्रतिशत है। यह सोच दृढ़ होकर इस दिशा में प्रयत्न शुरू होना मतलब जीवन में 'साधक' अवस्था का आरम्भ होना है।

अपने इस गुरूमार्ग में वं. दादा जी ने ऐसी सिद्धता की है कि जैसे जैसे भक्त की अवस्था बदलती है वैसे वैसे गुरूशक्ति भी अपनी अवस्था बदलती है। मतलब अब साधक अवस्था में गुरू मार्गदर्शन प्रेरणा के स्वरूप में उन्हीं प्रतिमाओं के माध्यम से होने लगता है। वं. दादा जी ने कहा है कि 'मार्गदर्शन' इस शब्द में दो अलग अलग शब्द है 1) मार्ग और 2) दर्शन। यहाँ दर्शन का मतलब है ज्ञान होना। 'ज्ञान' यह श्री साई शक प्रतिमाओं की अवस्था है।

साधक अवस्था के विकास में श्री साई शक प्रतिमा, 'ज्ञान' इस अवस्था का लाभ देती है। यहाँ ज्ञान का मतलब है सामने आनेवाले भक्त के कर्म का 'ज्ञान'। यह ज्ञान होने पर विकास प्राप्त कर देना यही इस प्रतिमा का साधक अवस्था में काम होता है। इसमें कामकाज करने वाला साधक या सभी अन्य भक्त (गुरू बंधू भगिनी) जब अन्य व्यक्तियों को दिनभर में कभी भी मिलते है तब अगर मिलने वाला व्यक्ति दुःखी है और वह हमसे कुछ अपनी तकलीफ कहता है तब इस साधक अवस्था में ऐसा ज्ञान अपने आप होता है कि, क्या कहने से सामने आये हुए व्यक्ति को दिलासा मिलेगा। और जब मन में गुरू का स्मरण करके हम उसके लिये प्रार्थना करेंगे तब गुरू शक्ति प्रवाहित होकर उसी दुःखी व्यक्ति का कष्ट दूर कर उसे आश्वस्त कर देगी और आगे विमोचन एवं दीक्षाओं का लाभ उसके जीवन में श्री गुरूकृपा से कार्यान्वित होगा।

इस प्रकार का कार्य श्री गुरू को हम सभी के माध्यम से करना है इसलिये इस अवस्था तक को हम किस प्रकार पहुँचे ऐसी भूख मन मे लगनी चाहिए। इस अवस्था में श्री कारण प्रतिमाओं से "भक्ति" यह अवस्था कार्यान्वित होती है। अब इस अवस्था में भक्ती का मतलब है, संसार के अनेकानेक विषयों से विभक्त होना मतलब अलग होना और गुरू यही जीवन का प्रमुख विषय मानकर गुरूशक्ति से दिनभर एकरूप रहना। इस प्रकार की गुरूभक्ति हमारे माध्यम से इस अवस्था में प्रकट होती है। इस अवस्था के लिये वं. दादा जी ने कहा था कि यह अवस्था कैसी है तो,

दुनिया का ताल्लुकदार हूँ, तलवदार नहीं हूँ।
बाजार से गुजरता हूँ, खरीददार नहीं हूँ।।

प्रतिमाएँ और गुरूशक्ति ऐसी है। लेकिन जैसे भक्त की अवस्था बदलेगी वैसे प्रतिमाओं की और गुरूशक्ति की अवस्था बदलती जाएगी। अनेक जन्म तक यह process चलता रहेगा। जब वं. दादा जी ने सेवक बनाए और खुद की सभी अवस्थाएँ सेवकों की पात्रता, अपात्रता न देखते हुए उनको प्रदान की तब कुछ सेवक कामकाज करने लगे और ऐसा महसूस करने लगे कि वे वं. दादा जी की अवस्था तक पहुँच गये हैं। तब वं. दादा जी ने एक बार कहा था कि, मैने तो मेरी सभी अवस्थाएँ तुम सबको प्रदान कर दी है और अभी भी कर रहा हूँ। तुम्हे सेवक बनाया और दस साल पहले मैं जो कामकाज करता था वह अब दस साल सेवा और उपासना तुम्हारे माध्यम से करवा के तुम्हें कामकाज करने के लिये बिठाया तो आपको लगा आप दादा बन गये। लेकिन मेरी पूरी दुवा होने के बावजूद आपको दस साल इस अवस्था तक पहुँचने के लिये लगे। उन दस सालों में मैंने जो उपासना की उसने आगे के कई सालों का काम कर दिया और वह अवस्था में, आज मैं हूँ। आपको अब वहाँ पहुँचने के लिये कितना समय लगेगा तो मुकाबला मुमकिन नहीं, हम तो बहुत आगे पहुँच गये है।"

उसी प्रकार हम अपना जितना विकास प्राप्त करेंगे वैसे नई अवस्था में गुरूभक्ति कार्यान्वित होती रहेगी।

उस साधक अवस्था में श्री महाकारण प्रतिमा 'सेवा' की अगली अवस्था प्राप्त कर देती हैं तब गुरू से या ईश्वर से साधक एकरूप हो जाता है और ईश्वरी प्रेरणा के अनुसार कार्य करता है। श्री नारायणी प्रतिमा की अवस्था है "प्रेरणा"।

वं. दादा जी ने आत्मनिवेदन में लिखा है कि यह प्रतिमाएँ आपके भावी जीवन में भविष्य की पीढ़ियों से बोलने लगेगी। मतलब तब ऐसी अवस्था तक पहुँचेंगे की ईश्वरी प्रेरणा जो प्रतिमाओं से प्रकट होगी वह धारण करने के काबिल हम गुरू कृपा से बन जायेंगे।

अब हमारा पहला प्रश्न था कि प्राप्त होने वाली प्रेरणा और अपने बुद्धि का कोई अन्य विचार इन दोनों में क्या अन्तर है?

सबसे महत्वपूर्ण और प्राथमिक (Basic) ज्ञान यह है कि प्रेरणा यह खुद के स्वार्थ के प्रति नहीं तो वह जगत कल्याण के लिये ही कार्यान्वित होती है। अब गुरू प्रेरणा या ईश्वरी प्रेरणा निसर्गाधिन है। मतलब जैसे गुरू कृपा है, या निसर्ग में बरसात होती है, वह बरसात सिर्फ आस्तिक (भगवान को मानने वाले) के खेत में नहीं होती तो वह सभी खेतों में होती हैं उसी प्रकार प्रेरणा वातावरण में प्रवाहित होते समय जो अन्य व्यक्ति उसे धारण कर पाते है, अनेक माध्यम से भी उस प्रेरणा का विषय प्रकट होता है। मतलब साधक को जब कोई साधन या कार्य करने की प्रेरणा होती है तब उस प्रेरणा की प्रचिती वातावरण से या अन्य व्यक्ति माध्यमों से प्रकट होती हैं। वह प्रचिती का बोध होने के लिये जीवन में अवधान रखना अत्यन्त आवश्यक है।

वं. दादा जी जब कार्य की सिद्धता कर रहे थे तब 1982 में उत्पत्ती और स्थिति तत्वों की शक्ति का लाभ होने के बाद लय तत्व कहाँ से प्राप्त करना है इस विचार में थे। तभी एक दिन बरसात हो रही थी और निसर्ग ने वं. दादा जी को ऐसा बोध किया कि 'म' तत्व (लय तत्व) गोकर्ण में हैं। लेकिन वं. दादा जी का अधिकार ऐसा था कि उन्होंने कहा नहीं, गोकर्ण के लय तत्व में (ज्योतिर्लिंग में) रावण के तकलिफ के वलय (Vibration) हैं और वहाँ शक्ति है। लेकिन उसके विनियोग का साधन सिद्ध नहीं है तो लय तत्व श्री गोरखनाथ जी से प्राप्त करना है, जिनके पास 'ऊँकार' का पूर्णत्व (लय तत्व) पूरी तरह है और उसके विनियोग का साधन मतलब विमोचन और दीक्षाओं की सिद्धता प्राप्त है। तब वं. दादा जी निसर्ग के बोध के खिलाफ जा रहे थे, इसलिये यह सोच रहे थे कि उन्हें होने वाली प्रेरणा यह उनके बुद्धि का विचार तो नहीं है। इस अवस्था में खुद के विचार किसी से भी प्रकट न करके वे प्रचिती का इंतजार कर रहे थे। तब वे गोवा में थे, और एक गुरूबंधू सुबह मिलने के लिये ऑफिस का काम छोड़कर आए और बोले कि Yesterday I had a dream that you and we went to Nepal, untill I tell you this I was feeling restless since morning उस भक्त को वं. दादा जी ने

कहा ठीक है हम जाऐंगे कभी। और इस भक्त के जाने के बाद वं. दादा जी ने दीपक दादा को Notebook और Pen लेकर बुलाया और श्री गोरखनाथ जी के चरणों में रखने के लिये चिट्ठी लिखी। दूसरे दिन सुबह दूसरा एक भक्त मांगलेगांव से (मांगले गांव यह गांव बत्तीस शिराला के बाजू में है) आया और कहने लगा कि सिर्फ आपके दर्शन के लिये आया हूँ। आपको नमस्कार करके वापस जाना हैं। तब उस भक्त के पास वं. दादा जी ने श्री गोरखनाथ जी को लिखी हुई चिट्ठी नरियल और बिडा देकर बत्तीस शिराला में मंदिर में जाने के लिये कहाँ। फिर आगे बत्तीस शिराला में लय तत्व का पूर्णत्व वं. दादा जी ने प्राप्त कर के आगे श्री शक्तिपीठ की स्थापना की।

यहाँ प्रेरणा की प्रचिती पहले आई, जब नेपाल जाने का विषय प्रकट हुआ, क्योंकि नेपाल के बॉर्डर पर पशुपतिश्वर में श्री गोरखनाथ जी का स्थान है। और आज वहाँ भी वं. दादा जी का कार्य केन्द्र उन्ही की दुवा से प्रस्थापित हुआ है।

वं. दादा, परम पूज्यनिय बाबा और अन्य दिव्य पूज्य विभूतियों की दुवा से, जो श्री शक्तिपीठ और प्रतिमाओं से कार्यान्वित हो रहा है, उससे यह कार्य अगली अवस्था में साकार होता रहेगा। वं. दादा जी का वचन है कि, जिस परिवार में चार प्रतिमा है और वो नित्य उपासना करते है वह परिवार आगे पूरी दुनिया में सोने जैसे चमकेंगे। मतलब उनको बहुत सोना मिलेगा, ऐहिक प्राप्ति होगी ऐसे नहीं तो उनको जीवन में सुख–शांति समाधान की कमी कभी भी नहीं महसूस होगी और वे परिवार आने वाले समय में दुनिया के आधार स्तम्भ (Pillar) होने वाले हैं। इतनी बड़ी जिम्मेदारी आज श्री गुरू ने हम पर छोड़ी है। आगे वं. दादा जी ने कहा कि सम्पत्ति का मोह मुझे कभी भी नहीं था; कितना भी सोना प्राप्त करने से कई गुना ज्यादा मुझे मेरे गुरू का सोना होना है। मतलब मेरे गुरू का मुझे लाड़ला होना है।

आज हमें भी यही तमन्ना रखकर इस मार्ग में आगे बढ़ना है कि जिससे हमारे हर आचार–1विचार, उच्चार श्री गुरू को अच्छे लगे और हम भी अपने गुरू के लाड़ले हो जाये। यही उनके चरणों में प्रार्थना।

AA 'kHk HkorAA

tue tue dk lod

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible